اپریل ۲۰۰۵ء

ماہنامہ

شعاع عمل

لکھنؤ

قَالَ اللّٰهُ تبارک و تعالٰی

قَدْ جَاءَكُمْ مِنَ اللّٰهِ نُورٌ وَكِتَابٌ مُبِينٌ

بیشک اللہ کی طرف سے تمہارے پاس نور آیا ہے اور روشن کتاب

مؤسسۂ نور ہدایت حسینیۂ غفران مآبؒ لکھنؤ-۳

R.N.I.No. UPBIL/2004/13526-AprIL 2005

Monthly

SHUA-E-AMAL

Lucknow

शुआ-ए-अमल

हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका

लखनऊ

NOOR-E-HIDAYAT FOUNDATION

Imambara Ghufran Maab, Chowk

LUCKNOW-3 (U.P.) INDIA

Phone : 2252230

वर्ष–1 R.N.I. No. UPBIL/2004/13526 अंक 10

माह अप्रैल 2005 लखनऊ

नूर–ए–हिदायत फ़ाउण्डेशन की
हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका

शुआ–ए–अमल

"लखनऊ"

वार्षिक – 200 रु मिलने का पता क़ीमत – 20 रु

नूर–ए–हिदायत फ़ाउण्डेशन
इमामबाड़ा हज़रत गुफ़रानमआब मौलाना कल्बे हुसैन रोड
चौक लखनऊ – 3 (उ.प्र.) भारत फोन न0 0522–2252230

सै. कल्बे जवाद प्रिन्टर, पब्लिशर और प्रोपरइटर ने मासिक शुआ–ए–अमल (उर्दू, हिन्दी) निज़ामी आफ़सेट प्रेस विक्टोरिया स्ट्रीट लखनऊ से और टाईटिल कवर एडर्वटाज़र्स इण्डिया गोलागंज लखनऊ से छपवाकर आफ़िस नूर–ए–हिदायत फ़ाउण्डेशन इमामबाड़ा गुफ़रानमआब मौलाना कल्बे हुसैन रोड लखनऊ–3 से प्रकाशित किया।

फ़ेहरिस्त मज़ामीन

न0	मज़मून	लेखक	पेज न0
1–	इंसानियत की उठान.................	आयतुल्लाह अली नक़ी साहब	3
2–	एक सबक़ इस्लाम से	मौलाना सैय्यद कल्बे आबिद साहब	7
3–	मकरक–ए–हक़ व बातिल	मोहतरमा तस्वीर फातिमा साहिबा	9
4–	क्या यह आयत पैग़म्बर (स0) के मासूम होने से मुआफिक़त रखती है?	आयतुल्लाह नासिर मकारिम शीराज़ी आयतुल्लाह जाफर सुबहानी	11
5–	हाय! उदासियाँ!!!	मु0 र0 आबिद	13
6–	मुख्य समाचार	इदारा	15

६ जिहाद की चार क़िस्में हैं : अम्र बिल मारूफ यानि अच्छाइयों का हुक्म देना, नहीं अनिल मुनकर यानि बुराइयों से रोकना। सब्र व इस्तेक़ामत के मौक़ों पर सच्चाई से काम लेना और फ़ासिक़ व बदकार से नफरत व बेज़ारी का इज़हार करना। (रसूल अकरम स0)

६ खुदावन्दे आलम ने वहदानियत पर ईमान को इसलिए फ़र्ज़ फरमाया ताकि लोगों को शिर्क की नजासत से पाक करे................ अम्र बिल मारूफ को अवाम के फायदे के लिए वाजिब क़रार दिया और नहीं अनिल मुनकर को इसलिए फर्ज़ फरमाया ताकि अहमक़ व कमअक़्ल लोगों को हवा व हवस की पैरवी से महफूज़ रखे। (हज़रत अली अ0)

इंसानियत की उठान

आखरी नबी की जीवनी की रोशनी में

सैय्यदुल उलेमा मौलाना सै0 अली नक़ी नक़वी (ताब सराह)
अनुवादक – मु0 र0 आबिद

आप (हज़रत मुहम्मद स0) चालीस बरस की उम्र में रिसालत (ईशदूत होने) पर मबऊस (निर्धारित) हुए, तेरह साल हिजरत से पहले मक्के की ज़िन्दगी है और दस साल हिजरत के बाद मदीने की ज़िन्दगी।

यह तीनों काल बिलकुल अलग–अलग परिस्थितियाँ रखते हैं जिनमें से हर एक काल बिलकुल एकरंगा है; किसी विचलन और अस्थायी स्वभाव को नहीं दिखाता मगर वे सब काल आपस में बहुत अलग हैं।

पहले चालीस बरस की अवधि में ज़बान बिलकुल चुप और केवल चरित्र के जौहर (सुलक्षण) खुले। यही आपकी सच्चाई का एक मनोवैज्ञानिक प्रमाण है, क्योंकि जो ग़लत दावा करने वाले होते हैं उनके कथनों और अभिव्यक्तियों की गति को देखा जाए तो ऐसा लगेगा कि वहाँ पहले उनके दिल–दिमाग़ में विचार आता है कि हमें कोई दावा करना चाहिए मगर उन्हें हिम्मत नहीं होती, इसलिए दुविधा भरे शब्द कहते हैं जिन से कभी सुनने वालों को घबराहट होती है और कभी इतमिनान, फिर वह धीरे–धीरे पैर आगे बढ़ाते हैं। पहले कोई ऐसा दावा करते हैं जिसको कोई माने–मतलब पहनाकर जनमति के अनुसार बनया जा सके या उसकी असलियत सिर्फ़ ख़ास–ख़ास लोग समझ सकें और आम लोग न समझ सकें। जब झिझक निकल जाती है तो फिर जी कड़ा करके खुलकर दावा कर देते हैं। इसकी पास की मिसालें अली मुहम्मद बाब और गुलाम अहमद क़ादियानी में बहुत आसानी से ढूँढी जा सकती है।

इस्लाम के पैग़म्बर (स0) की ज़बान से चालीस बरस तक कोई शब्द ऐसा नही निकला जिससे लोग रिसालत की दावेदारी का शुब्हा भी कर सकते या उनमें कोई बेचैनी पैदा होती। ग़लत से ग़लत रिवायत (बयान) ऐसा नहीं जो बताये कि काफ़िरों (नास्तिकों) ने आप (स0) के किसी शब्द से ऐसे दावे का आभास किया हो जिस पर उनमें रोष पैदा हुआ हो और फिर आपको उसके बारे में सफाई देने की ज़रूरत हुई हो। बल्कि इस काल में आपका काम सिर्फ़ अपने ऊँचे चरित्र का कर्यात्मक चित्र दिखाना था जिसने एक चुम्बकीय खिचाव के साथ दिलों को राम कर लिया था और आपकी लोक–प्रियता व्यापक हैसियत रखती थी। इसके बाद चालीस साल की उम्र में जब रिसालत का दावा किया तो वह बिलकुल वही था जो आख़िर तक आपका दावा रहा। यह नहीं हुआ कि पहले इस दावे में कमी, मन्दी हो फिर तेज़ी पैदा हो। या पहले दावा कुछ हो और फिर धीरे–धीरे इसमें बढ़ौती हो। अब रिसालत के इस दावे के बाद आप (स0) को कितनी मुसीबतें और तकलीफ़ें सहना पड़ीं वह सब को मालूम है। यह वह संकटमय काल था जब आपके शुभ सर पर कूड़ा–करकट फेंका जाता था, पाक शरीर पर पत्थरों की बारिश होती थी। तेरह बरस इसी तरह बीतते हैं मगर एक बार भी ऐसा नहीं होता कि

उनका हाथ तलवार की तरफ चला जाए और जिहाद का इरादा किया जाए।

अगर कोई रसूल (स0) के सिर्फ इस जीवनकाल को देखे तो यक़ीन करेगा कि जैसे आप (स0) बस अहिंसा के समर्थक हैं। यह तरीक़ा इतना स्थायी है कि कोई उत्पीड़न, कोई दिल पर ठेस, कोई व्यंग–उलाहना आप (स0) को इस रास्ते से हटा नही सकता। पहले चालीस बरस ही की तरह अब यह रंग इतना गहरा और यह तरीक़ा इतना पक्का है कि इस बीच कोई एक घटना भी इसके विपरीत नही उबरती। कोई बेबस और बेकस भी हो तो किसी समय तो उसे जोश आ ही जाता है और वह मरने–मारने पर तैयार हो जाता है, फिर चाहे उसे और ज़्यादा ही दुख क्यों न सहन करन पड़े। पर एक दो बरस नहीं तेरह साल लगातार एक अडिग सहन और शान्ति के साथ वही बिता सकता है जिसके सीने में वह दिल और दिल में वह भावनाएँ ही न हों जो जंग पर तैयार कर सकती हों।

इसी बीच वह समय आता है कि मुशरिक (खुदा का साथी मानने वाले) आप (स0) के जीवन–दीप को बुझाने का फैसला कर लेते हैं और एक रात तय हो जाती है कि उस रात सब मिलकर आप (स0) को शहीद कर डालें। उस वक़्त भी रसूल (स0) तलवार नियाम से बाहर नहीं लाते, किसी मुक़ाबले के लिए खड़े नहीं होते बल्कि खुदा के हुक्म से शहर छोड़ देते हैं। जो मुहम्मद (स0) की पहचान न रखता हो वह इस हटने को क्या समझेगा? यही तो कि जान के डर से शहर छोड़ दिया। और फिर वास्तविक्ता भी यह है कि जान के बचाव के लिए यह प्रबन्ध था मगर केवल जान नहीं बल्कि जान के साथ उन उद्देशों को संरक्षण जो जान से सम्बद्ध थे। बहर हाल इस चलन यानी वतन छोड़ने को कोई किसी शब्दसे संज्ञा दे किन्तु दुनिया इसे बहादुरी को ज़ाहिर करने वालाकाम नहीं समझेगी। और सिर्फ इस काम को देखकर अगर इस व्यक्ति के बारे में कोई राय बनायगा तो वह वास्तविक्ता के अनुरूप नही हो सकती बल्कि भ्रम का सबूत होगी।

अब तिरपन बरस की आयु है और आगे बुढ़ापे के बढ़ते हुए क़दम हैं। बचपन और जवानी का अधिक हिस्सा खामोशी में बीता है फिर जवानी से लेकर अधेड़ उम्र की स्थितियाँ पत्थर खाते और सहन करते बीतीं हैं और आख़िर में अब जान की रक्षा के लिए शहर छोड़ दिया है। भला किसे विचार हो सकता है कि जो एक समय में शन्ति–प्रियता से कमा लेते हुए शहर छोड़ दे वह बहुत जल्दी फौजों की कमान करते दिखेगा। जबकि मक्का ही नहीं वरन मदीने में आने के बाद भी आप (स0) ने जंग की कोई तैयारी नहीं की। इसका सबूत यह है कि एक साल की अवधि के बाद जब दुश्मनों से टकराव की नौबत आयी तो आप (स0) का दल कुल 313 आदमियों पर आधारित था, सिर्फ 13 तलवारें थीं और केवल दो घोड़े थे। ज़ाहिर है कि एक साल की तैयारी का नतीजा यह नहीं हो सकता था। जबकि एक साल में रचनात्मक काम बहुत से पूरे हो गये। मदीने में कई मस्जिदें बन गयीं, मुहाजिरों (मक्के से मदीने आय हुए लोग) के रहने के लिए मकान तैयार हो गये बहुत से दीवानी व फौजदारी के क़ानून लागू हो गये और इस तरह समुदाय का शासनिक संघटन हो गया मगर जंग को कोई सामान न जुटाया गया। इससे भी पता चल रहा है कि आपकी ओर से जंग को कोई सवाल नही है। मगर जब मुशरिकों की ओर से आक्रामक कार्यवाही हो गयी तो इसके बाद ''बद्र'' है, ''ओहद'' है, ''ख़न्दक़'' है, ''ख़ैबर'' है, ''हुनैन'' है। फिर यह नहीं कि अपने घर में बैठकर फौजें भेजी जाएँ और जीतों का सेहरा अपने सर बाँधा जाए, वरन्

खुदा के रसूल (स0) का चरित्र यह है कि छोटे और महत्वहीन लड़ाइयों तो किसी को नायक बनाकर भेज दिया है परन्तु हर महत्वपूर्ण और संकट के मौक़े पर सेनानायक खुद होते और यह नहीं कि साथियों सिपर बनाया जाए उनके घेरे में हों बल्कि इस्लाम के सबसे बड़े सिपाही हज़रत अली (अ0) सुपुत्र अबुतालिब की गवाही है कि जब लड़ाई का हंगामा (संग्राम) अत्यन्त तीव्रता पर होता था तो सदा रसूल (स0) हम सबसे ज़्यादा दुश्मन के निकट होते थे। फिर यह भी नहीं कि फौज के सहारे (युद्ध के लिए) उठ खड़े हों बल्कि ''उहद'' में यह समय भी आ गया कि दो एक को छोड़ बाक़ी सब मुसलमानों से रणक्षेत्र ख़ाली हो गया मगर उस वक़्त भी वह जो कुछ पहले, देखने में, जान बचाने को शहर छोड़ चुका था वह इस समय संकट की इतनी सख़्ती के समय जब आस–पास कोई भी सहारा देने वाला दिखायी नही देता अपनी जगह से एक क़दम भी पेछे नही हटता, घायल हो जाते हैं, चेहरा खून से भीग जाता है, कवच की कड़ियाँ टूटकर सर के अन्दर घुस जाती हैं, मुबारक दाँत चोटिल हो जाते हैं मगर अपनी जगह से पैर नहीं हटाते।

अब क्या अक़्ल व इन्साफ के अनुसार से हिजरत को जान के डर से इस माने में समझा जा सकता है जिससे बहादुरी पर धब्बा आये? हरगिज़ नहीं। यही हमने पहले भी कहा था कि सिर्फ़ इस काम को देख कर जो राय बनायी जायगी वह भ्रम का सबूत होगी। इस भ्रम का पर्दा इस समय तो निश्चय ही टूट जाना चाहिए।

रसूल (स0) के शौर्य की सही पहचान खुदा के शेर हज़रत अली (अ0) को थी। ''ओहद'' की लड़ाई में ''कुतिल मुहम्मद'' (मुहम्मद मारे गये) की आवाज़ थी जिसने सारी इस्लामी फ़ौज के पाँव उख़ाड़ दिये और इस ख़्याल ने अली (अ0) पर क्या असर किया इसे स्वयं आप ने बाद में बयान किया कि मैंने नज़र डाली, तो अल्लाह के रसूल (स0) नज़र न आए, मैंने दिल में कहा कि दो ही रूप है या वह शहीद हो गये और या अल्लाह ने उन्हें ईसा (अ0) की तरह उन्हें आसमान पर उठा लिया। दोनो परिस्थितयों में मैं अब ज़िन्दा रहकर क्या करूँगा? बस यह सोचना था और नियाम तोड़कर फेंक दिया और तलवार लेकर फौज में डूब गये। जब फ़ौज हटी तो रसूल (स0) दिखे। देखने की यह चीज़ है कि हज़रत अली (अ0) को सिर्फ़यह दो सोच हुए, रसूल (स0) शहीद हो गये या खुदा ने आसमान पर उठा लिया। यह भ्रम भी नही हुआ कि शायद रसूल (स0) भी मैदान से किसी बचत के कोने की ओर चले गये हों। यह अली (अ0) का ईमान (आस्था) है रसूल (स0) की बहादुरी पर। ईसाईयों ने रसूल (स0) का चित्र सिर्फ इसी युद्ध काल का यूँ खीचा कि एक हाथ में कुर्आन है और एक हाथ में तलवार। मगर जिस तरह रसूल की सिर्फ़ इस ज़िन्दगी को सामने रखकर वह राय बनाना ग़लत था कि आप मात्र अहिंसा के समर्थक है या सीने में वह दिल ही नहीं रखते जो युद्ध संग्राम कर सके। उसी प्रकार केवल दूसरे काल को सामने रखकर यह चित्र खींचना भी अन्याय है कि बस कुर्आन और तलवार। आखिर यह किसका चित्र है। मुहम्मद मस्तफा (स0) का ना! तो मुहम्मद नाम तो उस पूरे चरित्र के मालिक व्यक्ति का है जिसमें वह चालीस बरस भी हैं, और वह तेरह साल भी हैं और अब यह दस वर्ष भी हैं। इस व्यक्तव का सही चित्र तो वह होगा जो जीवन के इन सभी प्रकरणों को दिखा सके। यह केवल एक पहलू को दिखाने वाला चित्र तो मुहम्मद मुस्तफा (स0) का नही समझा जा सकता।

फिर इस दस बरस में भी ''बद्र'' और ''ओहद'', ''ख़न्दक़'' तथा ''ख़ैबर'' से आगे बढ़कर

तनिक ''हुदैबिया'' तक भी तो आइये। यहाँ रसूल (स0) किसी जंग के इरादे से नहीं बल्कि हज के मन से मक्के की ओर आ रहे हैं, साथ में वही उत्साही, विजयों को पाये हुए सिपाही है जो हर मैदान जीतते रहे हैं और सामने मक्के में वही हार खाया दल है जो हर मैदान में हारता रहा है और इस समय वह बिलकुल असंगठित और अव्यवस्थित भी है फिर भी उनकी हरकत ''खिसयानी बिल्ली खम्बा नोचे'' वाली है कि वह रास्ते की रुकावट होते हैं कि हम हज करने न देंगे। अरब की अन्तर्जातीय क़ानून के अनुसार हज का अधिकार काबे में हर एक को था। उनका रसूल के रास्ते में आड़े आना सिद्धान्ततयः जंग का आधार बनने के लिए बस काफी था। मगर रसूल (स0) इस मौक़े पर अपने दामन को चढ़ाई करके जंग करने के इल्ज़ाम से अलग रखते हुए सुलह समझौता कर के वापस हुए। और सुलह भी कैसी शर्तों पर? ऐसी शर्तों पर जिन्हें बहुत से साथ वाले अपने दल के लिए अपमान का कारण समझ रहे थे और इस्लामी दल में आम तौर से बेचैनी फैली हुई थी। ऐसी शर्तें थीं जैसी एक विजेता किसी हारे हुए से मनवाता है, इस समय वापस जाइये, इस साल हज न कीजिये, आने वाले साल आइयेगा, केवल तीन दिन मक्के में रहियेगा, चौथे दिन आप में से कोई दिखायी न दे, साल के बीच हममें से कोई भाग कर आपके पास जाय तो आपको वापस करना पड़ेगा, और आपमें से कोई भाग कर हमारे पास आये तो हम वापस नहीं करेंगे। उन्हें यह शर्तें पेश करने की हिम्मत क्यों हुई? निश्चय ही सिर्फ़ इसलिए कि वह नबुवत का मिज़ाज समझ गये थे कि आप इस समय जंग नही करेंगे बस तुच्छ जब यह समझ लेता है कि सामने वाला तलवार नही उठायेगा तो वह बढ़ता ही चला जाता है। आपने सब शर्तें मान लीं और वापस चले गये। इसके बाद जब मुशरिकों की तरफ से क़रार तोड़ा गया तो हज़रत (स0) ने विजयी रूप से मक्के में प्रवेश किया तो उस समय पिछली घटनाओं के आधार पर एक इन्सान की क्या भावनाएँ हो सकती थीं? जिन्होंने तेरह बरस पुनीत शरीर पर पत्थर मारे, जिन्होंने अपमान और कष्ट पहुँचाने में कोई कसर न उठा रखी, उनके हाथों वतन छोड़ना पड़ा और इसके बाद भी उन्होंने चैन लेने न दिया बल्कि जब तक दम में दम रहा बार–बार खूनी हमले करते रहे जिसमें कितने ही परिजन और दोस्त मिट्टी और खून में तड़पते दिखे विशेषतयः अपने हमदर्द चाचा जनाब हमज़ा का हत्या के बाद सीना काटते हुए देखना। आज वही दल सामने था और बिलकुल बेबस, अपने क़ब्ज़े में। यह समय था कि उनके पिछले सभी बरबर्तापूर्ण कुकर्मों की आज सज़ा दी जाती, मगर इस साकार ईश्वर–दया ने जब उन्हें बेबस पाया तो आम माफी का एलान कर दिया और ख़ून की एक बूँद धरती पर गिरने न दी।

अब दुनिया बताये कि रसूल (स0) जंग पसन्द करने वाले थे या शान्तिप्रिय। उनकी जंग या सुलह कोई भी भावनाओं के आधार पर न थी बल्कि दायित्व के आधीन काम होता था। जिस समय दायित्व की माँग ख़ामोशी थी चुप रहे और जब हालात के बदलने से जंग की ज़रूरत पड़ गयी तो जंग करने लगे, फिर जब सुलह (समझौते) की सम्भावना पैदा हो गयी और आचरण की ऊँचाई की माँग सुलह करना हुआ तो सुलह कर ली और जब दुश्मन बिलकुल बेबस असहाय हो गया तो दया–विनम्रता से काम लेकर माफ़ कर दिया।

यह सब हालात के भिन्नता से दायित्व में बदलाव हैं जो आप (स0) के चरित्र में दिखायी देता रहा है।

दायित्व का यह पालन स्वभाव के दबाव से जितना आज़ाद हो वही मानवता की मेराज (उत्थान) है।

एक सबक़ इस्लाम से

सफ़वतुल उलमा मौलाना सैय्यद क़ल्बे आबिद साहब क़िब्ला ताबा सराह
अनुवादक – सैय्यद सुफ़यान अहमद नदवी

एतराज

यह किया जा सकता है कि अगर यह मान लें कि पूरी दुनिया एक इशार–ए–''कुन'' (हो जा) के इशारा से पैदा हो गई तब तो यह माना जा सकता है कि सलीक़े और तरीक़े का पाया जाना पैदा करने वाले के हकीम और जानने वाला होने की दलील है। मगर डारोन और उनके हम ख़याल फ़लसफ़ियों का ख़याल जदलियत क़बूल करने के नतीजे में मौजूदा तरीक़े और सलीक़े का पाया जाना हकीम और अलीम पैदा करने वाले के मौजूद होने की दलील नही है क्योंकि इस ख़याल के मुताबिक़ नाक़िस चीज़ें ख़त्म होती रहती हैं, बेहतर और मुकम्मल चीज़ें बाक़ी रह जाती हैं और क्योंकि हमारे सामने ऐसी मुकम्मल चीज़ें हैं। इसलिए हमें हिकमतें और मसलह्तें नज़र आती हैं वरना कायनात में ग़लत और नाक़िस चीज़ें भी थीं।

जवाब

डारोन के ख़याल को अगर ग़ौर से देखा जाय तो मालूम हो जाता है कि इस ख़याल का नतीजा सही और मुकम्मल चीज़ का बाक़ी रहना नहीं है जिसके लिए माहोल ठीक हो। वही चीज़ें बाक़ी रहती हैं जो अपने माहोल के हिसाब से ठीक हों जिसका नतीजा यह है कि अगर माहोल नामुकम्मल चीज़ों के लिए ठीक होगा तो नामुकम्मल चीज़ों को बाक़ी रहना चाहिए और अगर मुकम्मल चीज़ के लिए ठीक होगा तो उसे बाक़ी रहना चाहिए। फिर इस उसूल को किसने चलाया कि कायनात में वही चीज़ें रहना चाहिए जो मुकम्मल हों और नामुकम्मल चीज़ें ख़त्म हो जाएँ, क्या इसके लिए किसी हकीम और अक़्लमन्द ज़ात का होना ज़रूरी नहीं है? जिसकी पूरी तरह चाहत यह हो कि मुकम्मल चीज़ बाक़ी रहे।

कहा जाता है कि बदशकल और बदबूदार फूलों के कम होने और खुशबूदार और खूबसूरत फूलों के बढ़ने की वजह यह है कि परिन्दे और मक्खियाँ जो पेड़ों के रेज़ों के इधर–उधर ले जाने की वजह होती हैं वह अच्छे रंग वाले और खुशबूदार पौधों को ही पसन्द करती हैं सवाल यह है कि इन बेज़बानों की फितरत में यह खूबसूरती और अच्छाई की तरफ जाना किसने पैदा किया?

डारोन के फ़लसफे का एक हिस्सा यह भी है कि तरक़्क़ी का यह सफर न समझ में आने वाले तरीक़े से लाखों सालों की मुद्दत में धीरे–धीरे होता है लेकिन बहुत सी ऐसी चीज़ें हैं जिनमें इस तरह से धीरे–धीरे बदलाव का ख़याल नही किया जा सकता।

आप कह लीजिये कि पहला जानदार जो सुनने और समझने की ताक़त से ख़ाली था जब इसमें सुनने और समझने की ताक़त पैदा हुई तो क्योंकि

माहोल ठीक–ठाक था इसलिए बाक़ी रह गयी।

सवाल यह है कि सुनने और समझने का वह पेचीदा क़ानून जिसे देखेकर आज भी इन्सानी अक़्ल हैरान है, धीरे–धीरे लाखों साल के बदलाव से पैदा हुआ या अचानक, अगर अचानक हो गया तो यह एक हकीम और ख़बीर पैदा करने वाले की ख़बर देता है और अगर धीरे–धीरे हुआ तो शुरुआती ज़माने में जब अअ्साब ने इस ताक़त को हासिल करने के लिए पहला क़दम उठाया था उस वक़्त न तो जानदार को देखने की ताक़त मिली थी और न समझने की क्योंकि यह तो लाखों साल के बाद आयी। और उस वक़्त माहोल भी उसका ठीक नही था और न ही इससे कोई फायदा था। इसलिए इस्तेअ्माल भी न था और डारोन के हिसाब से जो चीज़ बेफ़ायदा हो वह ख़त्म होनी चाहिए और जब पहला क़दम बेफायदा और न सुने जाने के क़ाबिल होने की वजह से बाक़ी न रहेगा तो तरक़्क़ी का वह आख़री ज़ीना जो अब सुनने और समझने की शक्ल में है कैसे मिलेगा? मानना पड़ेगा कि यह ताक़तें अचानक सामने आयीं हैं और कोई जानने और समझने वाली ज़ात थी जिसने जानदार की ज़रूरत को देखकर यह ताक़त दे दी।

जानदार का वजूद

इससे इन्कार मुमकिन नही कि जानदार की शुरुआत जानदार से हुई, बेजान और बेरूह में यह खूबी नही है कि वह अपने में रूह और ज़िन्दगी पैदा कर सके हर जानदार की पैदाईश के लिए कोई माद्दा ज़रूरी है जो खुद जानदार हो। अगर यह माद्दा पेड़–पौधों से हो तो इससे पेड़–पौधे पैदा होंगे, जानवरों मे से हो तो जानवर, और इन्सानों से ताल्लुक़ रखता है तो इन्सान पैदा होंगे।

बहुत से माद्दे ठीक माहोल न मिलने की वजह से ख़ामोश और बेकार रह जाते हैं और ठीक माहोल मिलने पर बढ़ोत्तरी हासिल करके पेड़ या जानदार की शक्ल में सामने आ जाते हैं यह कीड़े–मकोड़े जो बारिश के एक छींटे से अपने आप उबल आते हैं उनके माददे मिट्टी में मसले होते हैं जो ठीक माहोल मिलते ही बढ़कर सामने आ गये। ज़िन्दगी को समझने वाले ओलमा का यह सही ख़याल है। यह भी सही है कि माद्दे की ज़िन्दगी के लिए एक ख़ास गर्मी की ज़रूरत होती है और तपिश 200 डिग्री तक पहुँच जाये तो किसी भी माद्दे का बाक़ी रहना बिलकुल मुमकिन नही है।

ज़मीन के लिये इस वक़्त का ख़याल यह है कि यह सूरज का टूटा हुआ एक टुकड़ा है जिसकी गर्मी शुरु में वही थी जो सूरज की है। धीरे–धीरे इसकी ऊपरी परत ठण्डी होना शुरु हुई और एक ज़माने के बाद इस क़ाबिल हुई कि कोई जानदार इस पर बाक़ी रह सके। सूरज की गर्मी 11 हज़ार फारन हाईट है इसलिए ज़मीन का भी यही रहा होगा इसलिए किसी जानदार का इतनी सख़्त गर्मी में पाया जाना मुमकिन ही नही है और आज जो हज़ारों तरह के जानवर ज़मीन पर पाये जाते हैं वह उस वक़्त न होंगे तो फिर ज़मीन पर ज़िन्दगी कैसे आयी? मानना पड़ेगा कि एक मुकम्मल इरादा और इख़्तियार रखने वाला, पैदा करने वाला है जो अपने इरादे से (जिसका मतलब क़ुर्आन मजीद में ''कुलिर्रूह मिन अम्रि रब्बी'' कह कर लफ़्ज़े अम्र से लिया गया है) बेजान चीज़ में जान डाल सकता है।

यह तो सब मानते हैं कि इस कायनात की कोई शुरुआत है। कायनात के पैदा होने से पहले **बक़िया पेज 14 पर ....**

''मअरक-ए-हक़ व बातिल''

मोहतरमा तसवीर फातिमा जाफरी साहिबा

हक़ व बातिल, ख़ैर व शर, नूर व ज़ुल्मत के तसादुम की इबतिदा तख़लीक़े आदम अलैहिमुस्सलाम से हुई इबलीस ने हज़रत आदम (अ0) को सिजदा करने से इन्कार करके मख़लूक़ को सरकशी हुक्मे खुदा की नाफरमानी का दर्स देने का आग़ाज़ किया इस तरह से हक़ व बातिल की न ख़त्म होने वाली कशमकश का संगे बुनियाद इबलीस मलऊन के हाथों रख दिया गया।

शैतान ने क़यामत तक के लिए इन्सानों को गुमराह करने का चैलेन्ज कर दिया और इबलीस बशरी कमज़ोरियों यानि माल व ज़र, तख़्त व ताज, ऐश व इशरत से फायदा उठाते हुए इन्सानों को गुमराह करता रहा। अगर खुदा चाहता तो दुनिया में ख़ैर व शर, हक़ व बातिल का तसादुम न होता हर तरफ हक़ व सदाक़त के उजाले होते लेकिन यह तसादुम इस हक़ीक़त को उभारता है कि इन्सान अशरफुल मख़लूक़ात होने के साथ खुदमुख़्तार भी है। मालिक यह देखना चाहता है कि इस दुनिया में आकर किस ने मेरी बन्दगी की और किस ने मेरे हुक्म से मुँह मोड़ कर सरकशी की और इस के साथ–साथ फैसले का दिन मुक़र्रर कर दिया। सरकशी और बग़ावत का रास्ता इख़्तियार करने वालों के लिये जहन्नम बनाया और बन्दगी और इताअत करने वालों के लिये नेअमतों वाली जन्नत क़रार दी।

हक़ व बातिल दो मुतज़ाद क़ुव्वतें हैं दो ऐसे रास्ते हैं जिनका संगम किसी तरह मुमकिन नही क्योंकि दोनों के उसूल और मक़ासिद जुदा–जुदा होते हैं ज़ुल्म का दारो मदार ताक़त, ना इन्साफी, माद्दियात और हवस पर होता है जबकि हक़ का दारो मदार शराफ़त, इन्सानियत, अद्ल व इन्साफ, तवक्कुल और हक़ गोई पर होता है बातिल का मक़सद लोगों पर अपनी हुक्मरानी क़ायम करना होता है जबकि अहले हक़ का मक़सद बन्दों जाबिरों की हुकमरानी को ख़त्म करके अल्लाह की हुकमरानी क़ायम करना होता है।

और नतीजे में कभी हक़ का ग़लबा होता है और कभी बातिल अपनी आरज़ी कामियाबी पर नाज़ाँ होता है।

बातिल और बदी की क़ुव्वतों ने मद्दी वसाएल का सहारा लेकर हर दौर में हक़ की आवाज़ को दबाना चाहा मगर हक़ की सदा ने ज़ुल्म व तशद्दुद की ताक़तों को पाश–पाश कर दिया हर दौर इस की मिसालें पेश करता रहा है कभी बातिल का परचम फिरऔन के हाथों में आया और हक़ की सदा मूसा (अ0) की ज़बान बनी फिरऔन ने चाहा कि सदाए हक़ को नील की लहरों में दफना दे मगर नील की मौजें हक़ की सदा को रोकने में कामयाब न हो सकीं कभी नमरूद ने ताक़त के मुज़ाहरे से हक़ की सदा को

दबाना चाहा लेकिन हज़रत इबराहीम (अ0) ने आग में जाकर हक़ की शनाख़्त करवाई। कभी फारान की चोटीसे बुलन्द होने वाली सादाए हक़ को शेअब अबी तालिब में महसूर किया कभी ओहद, बद्र, ख़न्दक़ व ख़ैबर की घाटियों से इस आवाज़ को रोकने की कोशिश की गयी मगर बातिल को सिवाए नेदामत और शर्मिन्दगी के कुछ हाथ न आया। बातिल अपनी मुसलसल नाकामियों से बिलबिला उठा बातिल का परचम अब एशिया के सबसे बड़े हुकमरान यज़ीद के हाथों में आया बातिल इस बार यह ठान कर आया था कि इस बार इबलीस, शद्दाद, नमरूद, फिरऔन, अबुजहल ग़र्ज़ कि सबकी नाकामियों का बदला लेकर रहेगा इस बार बातिल अपनी पूरी आब व ताब मुकम्मल ज़ुल्म व सितम, बरबरियत के माद्दी वसाएल के तमाम तर इख़्तियारात के साथ हक़ की आवाज़ को हमेशा के लिए दबाने को आगे बढ़ा। इस बार बातिल के तमाम चेहरे यज़ीद के रूप में उभर कर सामने आये अब वह वक़्त आ गया था कि मुजस्सम बातिल व पैकरे बदी के मुक़ाबले में मुजस्सम हक़ व नेकी का पैकर हो जिसके जिस्म में मूसा, ईसा, इबराहीम, इस्माईल और मोहम्मदे अरबी अलैहिमुस्सलाम की रूह जलवा गर हो वह हक़े मुजस्सम, पैकरे नेकी, मुफस्सिरे इस्लाम, मुहाफिज़े कुर्आन नवासए रसूल (स0) हुसैन इब्ने अली (अ0) थे।

हुसैन ने हक़ की बक़ा के लिए एक नहीं मुख़्तलिफ तरह की कुर्बानियाँ पेश कीं। क्योंकि अब वह वक़्त आ चुका था कि वह यज़ीद व यज़ीदियत को हमेशा के लिए मिटा दे। इमाम (अ0) ने बुराई को मिटाने के लिए यज़ीदियत को बेनक़ाब करने के लिए एक बे नज़ीर लशकर तैयार किया और मुक़ाबले का एक नया तरीक़ा निकाला जो इससे पहले दुनिया ने नही देखा था आप ने हज़ारों लाखों नुफ़ूस को जमा नहीं किया बल्कि अपने लशकर के लिए ऐसे अफ़राद को लिया जो अपने ज़ोहद व तक़वा, किरदार व औसाफ की बदौलत इस्लाम की तालीमात के तरजुमान थे आप ने गुलिस्ताने रिसालत के फूलों से अपने लशकर को सजाया और रसूले खुदा (स0) के घराने की मोअज़्ज़ज़ ख़्वातीन जिन में आपकी हक़ीक़ी नवासियाँ भी शामिल थीं को साथ लिया ताकि इन्क़िलाब इस्लामी औरतों की ख़िदमात से ख़ाली न रह जाए। आप अपने दुश्मन की फ़ितरत को भी खूब जानते थे और आपको अपने मिशन की अहमियत का भी अन्दाज़ा था अपने मिशन के लिए जिस तरह के भी किरदार की ज़रूरत थी उसको मुन्तख़ब कर लिया जिन किरदारों ने कुर्बानी पेश करके क़यामत तक के लिए हक़ के हौसले को बुलन्द करने वाली दर्सगाह का क़याम कर दिया जिस में बहत्तर किरदारों में हज़ारों तालीमात, एख़लाक़ियाते इस्लामी निहाँ थीं। ईसार, कुर्बानी, शुक्र, सब्र, शुजाअत, फ़र्ज़ शनासी, जुल्म का मुक़ाबला रहती दुनिया तक मुतलाशिए हक़ इस दर्सगाह से नमूना हासिल करते रहेंगे और हर ज़माने के यज़ीदी मिज़ाज हुक्मरानों के दिलों में ख़ौफ व वहशत पैदा करते रहेंगे।

बातिल की फ़सल के लिये बन्जर है कर्बला
प्यासा है हक़ तो एक समन्दर है कर्बला
कल भी यज़ीद ख़ौफ ज़दह था हुसैन से
अब भी यज़ीदियों के लिए डर है कर्बला

वस्सलामु अला मनित्तबअल हुदा

क्या यह आयत पैग़म्बर (स0) के मासूम होने से मुआफ़िक़त रखती है?

आयतुल्लाह नासिर मकारिम शीराज़ी
आयतुल्लाह जाफ़र सुबहानी

सवाल : अगर पैग़म्बरे इस्लाम (स0) और दूसरे पैग़म्बर (अ0) गुनाहों से पाक हैं तो फ़िर इस आयत में पैग़म्बर के गुनाह बख़्शने से क्या मुराद है?

इन्ना फ़तह्ना लक फत्हम्मुबीना □ लियग़फिर लकल्लाहु मा तक़द्दम मिन ज़म्बिका वमा तअख़्खर व युतिम्म निअ्मतहू अलैइका वयह्दियक सिरातम्मुस्तक़ीमा □

''हम तुम्हारे लिये नुमाया फ़तह (फ़त्हे मक्का) वुजूद में लाए ताकि खुदा तुम्हारे पिछले और आइन्दा गुनाह बख़्श दे और अपनी नेअमत को तुम्हारे हक़ में कामिल कर दे और तुम्हें राह–रास्त की जानिब हिदायत कर दे।'' (सूरए फतह आयत–1,2)

जवाबः पहले तो यह बात ज़हन नशीन रखनी चाहिए कि तहरीकों के बानी और इन्क़िलाबी अश्ख़ास जो आम ख़यालात के धारे के ख़िलाफ़ क़दम उठाते हैं और चाहते हैं कि अपने तरक़्क़ी पसन्दाना प्रोग्राम के ज़रिये रू बइन्हितात और आलूदा मुआशरे की इस्लाह करें वह पहले क़दम पर ही मुख़ालिफ़तों, इल्ज़ाम तराशियों, नारवा निस्बतों और बेबुनियाद तोहमतों से दोचार होते हैं। तोहमत लगाना उन हरबों में से एक है जो पसमान्दह मुआशरों में इस्तेअ्माल किये जाते हैं और इसका मक़सद यह होता है कि अपने मुसलिह अफ़राद और शख़सियतों को फ़िक्र की कोताही और अपनी कम ज़र्फ़ी की बिना पर तोहमतों और नारवा निस्बातों के ज़हर आलूद तीरों का निशाना बनाया जाए।

पैग़म्बरे इस्लाम (स0) भी इस क़ाएदे से मुस्तस्ना न थे। आप को भी क़ुरैश की मुख़ालिफत और बेबुनियाद तोहमतों का सामना करना पड़ा। जिस शख़्स को कल तक क़ुरैश की सादिक़, अमीन और परहेज़गार हस्ती माना जाता था उसने जिस दिन उनके पस्त ख़यालात की मुख़ालिफ़त की और लोगों को खुदा परस्ती की दावत दी उसी दिन से उस पर जादूगरी, कुहानत, जुनून और खुदा पर झूठे इल्ज़ाम बाँधने की तोहमतें लगायी जाने लगीं, अल्लाह तआला ने इन तोहमतों को कुफ़्फ़ारे क़ुरैश से नक़ल किया है। यह एक मुसल्लमा अम्र है कि अगर ऐसी तोहमतों का कुछ लोगों पर असर न भी हो तब भी यह कुछ सादह लौह और कम फ़हम लोगों के लिये पैग़म्बर की रास्तगोई (सच्चाई) और दावे के बारे में शक व शुब्हे की बाइस बनती हैं और इसमें कोई कलाम नहीं कि लोगों का एक गिरोह एक मुद्दत तक इन तोहमतों के बारे में शक व तरद्दुद और दोराई का शिकार रहता है।

इन हालात में क्योंकर मुमकिन है कि इन तोहमतों का इज़ाला किया जाए ताकि हक़ीक़त का चेहरा इन औहाम के गोरख धंधे के दरमियान में से बेनक़ाब हो जाए?

इसका एक ही मोअस्सर तरीक़ा है और वह यह कि एक उलुल अज़्म और तरक़्क़ी पसन्द शख़्स जो इज्तेमाई तरज़े फ़िक्र और नस्बुलऐन का अलमबरदार हो अगर वह कामियाब हो जाए और अपना मक़सद हासिल कर ले और लोग खुद अपनी आँखों से इसकी

तहरीक के फ़वाएद देख लें तो तमाम तोहमतें और इल्ज़ाम तराशियाँ नक़्श बर आब हो जाती है और इन तोहमतों की जगह कई अच्छे अल्क़ाब ले लेते हैं जो अज़मत, कुदरत और मानवियत का मज़हर होते है और अगर सूरते हाल इसके बरअक्स हो तो अक्सर यह तोहमतें बाज़ लोगों के ज़हनों में मुद्दत तक बाक़ी रहती हैं और कई अशख़ास के बारे में कारगर और मोअस्सर साबित होती हैं।

बिलकुल यही बात पैग़म्बरे इस्लाम (स0) के बारे में भी कही जा सकती है। आप ने एक तरक़्क़ी पसन्दाना प्रोग्राम और कई ऐसे ताबनाक क़वानीन के साथ मुक़ाबले के मैदान में क़दम रखा जो अवाम के लिये तो मनफ़अत बख़्श थे लेकिन हुकूमत के ख़िलाफ़ जाते थे। आप इस मैदान में अपनी आइन्दा कामियाबियों की ख़बर देते थे और अल्लाह तआला की इनायात की रोशनी में और अपनी और अपने वफ़ादार साथियों की मुस्तक़िल मिज़ाजी और साबित क़दमी की बदौलत आप ने तमाम मुश्किलात पर क़ाबू पा लिया। आख़िरकार नौबत यहाँ तक पहुँची कि शिर्क का गढ़ और उन इल्ज़ाम तराशियों की पैदाईश का मरकज़ मुसलमानों के क़ब्ज़े में आ गया और मक्का एक खुली हुई कामियाबी के तौर पर फतह हो गया।

यह कामियाबी जो इस अम्र का सबब बनी कि कुरैश अपनी तमाम कुव्वत के साथ इस्लाम के ज़ेरे हुकूमत और उसके क़ब्ज़े में आ जाएँ, अपने दामन में एक इससे भी बड़ा नतीजा रखती थी और वह यह कि जब यह मर्दे जरी इस मैदान में सुर खुरु हुआ और लोगों ने इसकी जद्दो जेहद का बेहतरीन नतीजा वाज़ेह तौर पर देख लिया और उसने अपने मानवी इन्क़िलाब को पाए तकमील तक पहुँचा दिया तो इस कामियाबी की रोशनी में दरोग गोओं और झूठी तोहमतें लगाने वालों के मुँह बन्द हो गए इस अज़ीम कामियाबी की मौजूदगी में वह उसे मजनून और दीवाना या साहिर और काहिन नही कह सकते थे क्योंकि वह शख़्स जिसमें इस क़िस्म के रूहानी और नफ़सियाती नक़ाएस मौजूद हों ऐसा इन्क़िलाब बरपा नहीं कर सकता।

लिहाज़ा मज़कूरा बाला आयत में ''ज़म्ब'' से मुराद ही नाजाएज़ तोहमतें हैं जो फ़त्हे मक्का से पहले तक कुरैश के सादह लौह अफराद के दिलों में मौजूद थीं और इस कामियाबी ने उन तमाम ना रवा निस्बतों को बातिल कर दिया और दुनिया के इस अज़ीम नजात दहेन्दा के मुक़द्दस दामन से यह इल्ज़ाम दूर हो गए। ज़ाहिर है कि अगर वही सूरते हाल बाक़ी रहती जो फ़त्हे मक्का से पहले थी और रसूले अकरम (स0) के मुक़ाबले के मैदान में कामियाबी हासिल न कर पाते तो तोहमतें भी अपनी जगह क़ाएम रहतीं।

इस तफ़सीर की गवाही दो चाज़ें देती हैः—

1— सरीह तौर पर आयत यह कहती है कि हम फ़त्हे मक्का वजूद में लाए ताकि इसकी रौशनी में तुम्हारे गुनाह बख़्श दिये जाएँ।

अगर गुनाहों की बख़शिश से मुराद तोहमतों और नाजाएज़ इल्ज़ाम तराशियों का बातिल करना ही हो जैसा कि हम ने ऊपर तफसील से बयान किया है तो फिर इन दो चीज़ों यानि ''फ़त्हे मक्का'' और ''गुनाहों की बख़शिश'' का इरतेबात सही और वाज़ेह हो जाता है क्योंकि इस कामियाबी ने तोहमतों की तकरार के बारे में लोगों के मुँह बन्द कर दिये और फिर किसी के हज़रत (स0) को इल्ज़ाम देने का सवाल बाक़ी न रहा और अगर इन से मुराद शरअी गुनाह और नाफरमानियाँ हों तो फिर इन गुनाहों की बख़शिश का ज़रिया एक अस्करी फ़त्ह और ज़ाहिरी कामियाबी नहीं बल्कि इस्तेग़फ़ार और तौबा है।

2— आयत का वाज़ेह मफ़हूम यह है कि यह फ़त्ह और कामियाबी गुज़श्ता और आइन्दा गुनाहों की बख़शिश के अस्बाब वजूद में लाई और यह जुम्ला उसी सूरत में सही मानों का हामिल हो सकता है जब इससे मुराद तोहमतें और ना रवा निस्बतें ही हों यानि यह अज़ीम इज्तेमाअी कामियाबी इस अम्र का मूजिब बनी कि साबिक़ा तोहमतें ज़ाएल हो जाएँ और आइन्दा भी कोई ऐसी तोहमतें न लगाए लेकिन अगर इससे मुराद शरअी गुनाह ही हों तो फिर आइन्दा गुनाहों की बख़शिश का सही मफहूम ज़ाहिर नही होता।

हाय! उदासियाँ !!!

मु0 र0 आबिद

18/19 फरवरी, 2005 की रात,

काँपता सूर्य अस्त हो चुका था............. सिसकता चाँद अपनी रात की यात्रा बीचसे ही काट कर डूब चुका था...............बस झिलमिलाते तारे.............आंसुओं के समान................प्रकाश के साक्षी बने............सम्भवतः इतिहास–रचना मी लीन थे.............अचानक कानों में एक आवाज़ टकरायी ....बिजली की तरह............क्या? क्या!! चौधरी साहब चल बसे.................और :

फिर उसके बाद उजाला रहा न दीपों में!! ज्ञानेन्द्रियाँ सुन्न हो गयीं, मन बुझ गया, चारो ओर उदासियाँ छा गयीं। संचार माध्यम का चकित चेहरा फटा का फटा रह गया। समय के इतिहास में शोक–गीत रच रहा था।

एक अद्‌भुत व्यक्ति से संसार ख़ाली हो गया.....

वह यथार्थवादक व्यक्ति..............जो असत्य के हाथों न बिका,

वह अकेला इकलौता व्यक्तत्व...........जो एकताई की संज्ञा, स्वाभिमान का रूपक था,

वह भारी भरकम व्यक्तत्व............जिसका ज्ञान–गुरुत्व बुद्धजीवी जगत में मूल्य रखता,

वह बहुमुखी बहुआयामी जीव..........जिसमें सामाजिक वक्ता (लिपिक) प्राणी की प्रतिमा पूरी चमक दमक के साथ सुशोभित दिखी,

वह आदर्श सामाजिक Species जिसकी सामाजिकता किसी भी भेद–तनाव की परवाह न कर सामूहिकता के सौन्दर्य की साज–सज्जा करती रही और जिसके आचरण सौहार्द और सहायिकताके आशय उबारा किये,

वह दो टूक बोल का सटीक कलाकार जिसकी अचूक बेलाग समीक्षा किसी समीप–दूर, परिजन–पजन, अपने पराये का भेदभाव न करती और वहीं जिसकी सूक्ष्मदर्शी व्यापक प्रशंसा भी सभी सांस्कृतिक सामाजिक सीमाबद्धता Decorum को पार कर लिया करती,

जाग्रुक्ता का वह बड़ा बूढ़ा पुरोहित जिसके दिमाग़ को प्रभावित कर देने की क्षमता सामर्थ किसी घटना–दुर्घटना में न थी,

मान सम्मान और बांकपन का वह ऊँचे क़द का जियाला जिसका सर झुकना नहीं जानता था,

जिसकी लेखनी बिकना नहीं जानती थी,

जिसके पाँव डिगना नहीं जानते थे,

आज वह प्रकृति के एक पुराने जाने पहचाने अन्तिम निर्णय के सामने नतस्तक हो गया.........वह निर्णय जो कभी बदला नहीं करता।

वह खद्दरधारी धर्माचार्य जिसकी सर्वज्ञता जानी पहचानी और ज्ञान–जगत में माने रखती थी, जिसका कहा हुआ प्रामाणिकता का पर्याय होता और जिसको राजनीति के दिग्गज नमन

करना अपना गर्व समझते, जिसकी ठोकर राज–मुकुट से खेलती, वह आज मनो मिट्टी के नीचे चला गया, साकार नमन हो गया। ज्ञान–स्तम्भ धराशायी हो गया।

वह साहित्यकार, ज्ञानी, समीक्षक, समालोचक, नेता, धर्मगुरु, शोध का सूत्रधार, अपनी शैली का रचयिता, पत्रकार, लेखनी की मर्यादा, समुदाय की शोभा, जन सहयागी, राष्ट्रप्रेमी, स्वतन्त्रता सेनानी और तौहीद अर्थात ऐकेश्वरवाद का संचारक अतीत में समा गया। अकबरपुर ने बड़ा ही अंधकार बिखेर दिया, देश अचेत है, संसार उदास है। अक्षर का जगत अनाथ हो गया। हम उसके शोक में डूबे हैं। हम उसकी पहचान न कर सके, उसका मूल्य न समझ पाये। शायद जगपुरुषों का यही भाग्य होता है। हाँ जाते–जाते वह अपने पिछड़े राष्ट्र और समुदाय की परीक्षा लेता गया। जनाधिकार के इस खुले हुए ध्वजवाहक, सामाजिक हीरो, समाजवाद के अग्रणीय नेता के दायित्व से हम कहाँ तक उन्मुक्त हो पाते हैं, समय ही बतायेगा। अभी तक तो घोर अन्धकार, निराशा और शून्य है। उदासीनता के अतिरिक्त कुछ नहीं दिखायी देता।

फिर भी लेखनी अपने किसी प्रेमी को यूँ ही नहीं जाने देती, आज नहीं तो कल उसकी जय–जयकार करेगी :

क़लम आज उनकी ''जय'' बोल
अन्धा चका चौंध का मारा,
क्या जाने इतिहास बेचारा।
साक्षी उनकी महिमा के है,
सूर्य, चन्द्र, भुगोल, खगोल।
क़लम आज उनकी ''जय'' बोल।।

(बक़िया एक सबक़ इस्लाम से..........)

रुके हुए और खामोश और ठहरे हुए सितारे का होना माना जाए और कहा जाय कि इसमें किसी अचानक हादसे की वजह से हरकत हुई और दूसरे सितारे बनना शुरु हो गए लेकिन इसका जवाब क्या है कि खामोश और पुरसुकून माद्दे में अचानक हरकत आई कैसे? और वह ध मामाका क्यों हुआ जिसने एक जगह ठहरी हुई कायनात को हरकत में बदल दिया इस जगह पर अक़्ल परेशान हुई तो मज़हब का सहारा लेना पड़ा और मानना पड़ा कि हर माद्दे के पीछे भी कोई ताक़त है जिसने उसे हरकत दी और पैदाईश का चक्कर चलाया, ज़मीन पर लुढ़कते हुए पहिये को देखकर हम अन्दाज़ा लगा लेते हैं कि कोई हाथ था जिसने इसे हरकत दी थी चाहे वह हाथ हमें नज़र भी न आ रहा हो। इन्सान के बनाये हुए दर्जनों हवाई जहाज़ खुले आसमान में चक्कर लगा रहे हैं जिनमें कोई ड्राईवर नही है, तो क्या कह सकते हैं कि यह हमेशा से इसी तरह अपने आप हरकत में लगे हुए हैं! नहीं बल्कि मानते हैं कि एक हरकत देने वाली ताक़त ने उन्हें आसमान में पहुँचा कर एक चुनी हुई जगह पर चला दिया इस तरह अन्दाज़ा लगया जा सकता है कि एक ऐसी भरपूर ताक़त वाला हाथ है जिसने इस कायनात को तमाम सितारों के साथ हरकत में दिया है और पैदाइश के रास्ते पर डाला है इसी लिए तो कुर्आन ने कहा कि ''इन्न– इ–ल रब्बिक– मुन्तह–'' किसी भी रास्ते से जाओं तुम्हारी इन्तिहा रब ही पर होगी।

इदारा

मुख्य समाचार

इंक़लाबे इस्लामी ईरान से आज भी दुनिया परेशान है।

आक़ा अली रिज़ाई साहब

लखनऊ 9 फरवरी। इंक़िलाबे इस्लामी ईरान की छब्बीसवीं सालगिरह के मौक़े पर देर रात तक चले एक सेमिनार में ईरान से आये मेहमाने ख़ुसूसी हुज्जतुल इस्लाम आक़ा अली रिज़ाई ने कहा कि इस्लामी इंक़िलाबे ईरान की कामियाबी इस बात से ज़ाहिर होती है कि आज तक दुनिया इससे परेशान है और हज़रत आयतुल्लाह ख़ुमैनी ने जो पैग़ाम दिया था उसके ख़िलाफ इस्लाम के दुश्मन पानी की तरह पैसा ख़र्च कर रहे हैं।

नूरे हिदायत फाउण्डेशन की जानिब से नायाब पैलेस में "इंक़िलाबे इस्लामी ईरान के आलमी असरात" मोजूअ पर मुनअक़िद सेमिनार में आगे उन्होंने कहा कि आज इंक़िलाब के माने और मतलब को सही तौर पर नही पेश किया जा रहा है। जबकि इस लफ्ज़ का सही मतलब उस वक़्त सामने आ सकता है जब हम इस्लाम की तारीख़ पर एक नज़र डालें। उन्होंने कहा कि इस्लामी जमहूरी ईरान के क़याम का मक़सद इस्लामी क़दरों की हिफाज़त था जबकि मग़रिबी ताक़तें आज उन्हीं क़दरों को बर्बाद करने पर लगी हुई हैं इसलिए मुसलमानों में इत्तेहाद की ज़रूरत और बढ़ गई है। अगर एक अरब मुसलमान एक आवाज़ हो जायें तो दुनिया की कोई ताक़त उनके आगे ठहर नहीं सकती यही इमाम ख़ुमैनी का मिशन था।

आक़ा अली रिज़ाई साहब ने आयतुल्लाह ख़ुमैनी का एक क़ौल नक़ल करते हुए कहा कि अगर इस्लाम की बहुत ज़ियादा मुख़ालेफत होती नज़र आये तो समझना कि इस्लाम सही रास्ते पर चल रहा है।

नूरे हिदायत फाउण्डेशन के रूह रवाँ मौलाना सैय्यद कल्बे जवाद साहब ने कहा कि जिस्म और रूह के इत्तेहाद का नाम ज़िन्दगी है और यही वजह है कि इसका इत्तेहाद ख़त्म होते ही इन्सान मौत के आग़ोश में चला जाता है। उन्होंने मिसाल देते हुए कहा कि सूरज ज़ियादा गर्म है लेकिन ज़मीन तक पहुँचते–पहुँचते इसकी किरनें फैल जाती हैं नतीजे में असर कम हो जाता है लेकिन जब आतिशी शीशा इनको इकटठा करता है तो आग भी लग सकती है। अपने सदारती ख़ुतबे में मौलाना कल्बे जवाद साहब ने इत्तेहाद की अहमिय्यत पर रोशनी डालते हुए कहा कि इत्तेहाद दुनिया की सबसे बड़ी ताक़त का नाम है तीन करोड़ मुसलमान अगर मुत्तहिद होकर ईरान की ज़ालिम हुकूमत का तख़्ता पलट सकते हैं तो दुनिया के एक अरब मुसलमान मुत्तहिद होकर दुनिया की तमाम सुपर पावरों का नक़्शा बदल सकते हैं।

प्रोग्राम का आग़ाज़ मौलाना साबिर अली इमरानी मुदररिस जामिया इमामिया तन्ज़ीमुल मकातिब ने तिलावते कलाम पाक से किया और निज़ामत के फराएज़ शकील हसन शमसी ने अन्जाम दिये। सेमिनार के कनविनर सैय्यद मुस्तफा हुसैन नक़वी असीफ जायसी ने आये हुए तमाम मेहमानों का शुक्रिया अदा किया और इस सेमिनार को कामियाब बनाने वाले हैदर अली, अफरोज़ आग़ा वग़ैरा की काशिशों को सराहा और उम्मीद की कि नूरे हिदायत फाउण्डेशन की जानिब से आईन्दा भी होने वाले प्रोग्राम इसी तरह कामियाबी की राह पर चलते रहेंगे।

सेमिनार में शिरकत करने वाले उलमा और दानिशवरों में मौलाना हैदर मेहदी, मौलाना मुमताज़ जाफ़र, मौलान सैफ अब्बास, मौलाना अमीर हैदर, प्रोफेसर ख़ान मुहम्मद आतिफ, जवाहर लाल नहरू युनिवर्सिटी देहली के फारसी के सदर डाक्टर ऐनुल हसन, मौलाना मुहम्मद सईद नक़वी, हसनैन आबदी, मौलाना मुहम्मद अब्बास, शीआ इण्टर कालेज के मुदररिस तालिब ज़ैदी साहेबान वग़ैरा क़ाबिले ज़िक्र हैं।

अज़ादारी-ए-इमाम हुसैन (अ0) हमारे लिये एक अज़ीम नेअमत है: मौलाना कल्बे जवाद साहब

लखनऊ। क़ाएदे मिल्लत जाफरिया मौलाना सैय्यद कल्बे जवाद साहब ने जुमे के मौक़े पर आसफी मस्जिद में मोमिनीन को ख़िताब करते हुए अय्यामे अज़ा की फ़ज़ीलत और उसकी अफादियत को बयान करते हुए कहा कि अज़ादारी–ए–इमामे हुसैन (अ0) हमारे लिए एक अज़ीम नेअमत है और हमारी ज़िम्मेदारी है कि इस नेअमत की हिफ़ाज़त करें। आज दुनिया की बड़ी ताक़तें अज़ादारी के ख़िलाफ अरबों रुपये ख़र्च कर रही हैं ताकि इसको मिटा दिया जाए क्यों कि वह जानती हैं कि यह अज़ादारी–ए–सैय्यदुश्शोहदा (अ0) एक ऐसी चीज़ है जिसके ज़रिए से हम आपस में मुत्तहिद हैं और अज़ादारी के नाम पर हम अपनी जान देने के लिए भी तैयार हैं लिहाज़ा उनकी पूरी कोशिश है कि अज़ादारी को ख़त्म करके हमारे दरमियान इन्तिशार पैदा करके अपने मक़सद में कामयाबी हासिल करें। लेकिन हम हरगिज़ उनको अपने मक़सद में कामयाब नहीं होने देंगे। और इस राह में आने वाली मज़बूत दीवारों को भी गिरा देंगें।

मौलाना मौसूफ ने नमाज़ियों को ख़िताब करते हुए इल्ज़ाम आएद किया कि पुलिस शीआ सुन्नी फसाद के सिलसिले में शीओं को फ़र्ज़ी मुक़द्दमों में नामज़द कर रही है और कोई उनकी फरयाद सुनने वाला नही है। उन्होंने मुक़द्दमात फौरन हटाने का मुतालबा करते हुए कहा कि अगर मुक़द्दमात नहीं हटाये गये तो हुकूमत से न किसी तरह की बात–चीत होगी और न ही उनका साथ दिया जायेगा।

आख़िर में उन्होंने कहा कि हम बिके हुए लोग नहीं है कि जो कहा जाए उसे सर झुका कर सुनते रहें और हर बात पर हाँ करते रहें। उन्होंने कहा कि अगर क़ौम को नुक़सान पहुँचेगा तो हुकूमत का साथ नही दिया जायेगा। उन्होंने साफ–साफ कहा कि जब तक असली मुजरिमों को गिरफ्तार नही किया जाता हुकूमत से कोई बात–चीत नहीं होगी। उन्होंने ऐसे मोलवियों पर सख़्त एतराज़ किया जो अपनी तक़रीरों से फसाद फैलाते हैं ऐसे लोगों को उन्होंने फसादी ताक़तों का एजेण्ट बताया।

मौलाना कल्बे सादिक़ साहब को अमरीका में दाख़ले की रोक पर शीओं का मुज़ाहेरा

25 मार्च। मौलाना कल्बे सादिक़ साहब को अमरीका में दाख़िल होने से मना कर देने पर शीओं ने बाद नमाज़ जुमा आसिफ़ी मस्जिद के बाहर एक ज़बरदस्त मुज़ाहेरा किया और अमरीका मुख़ालिफ नारे लागाये और मुतालबा किया कि हुकूमते हिन्द भी अमरीकियों के साथ ऐसा ही करे।

मौलाना कल्बे जवाद साहब ने नमाज़े जुमा के ख़ुतबे में हज़ारों नमाज़ियों को तालीमाते इस्लामी की तलक़ीन करते हुए कहा कि मौलाना कल्बे सादिक़ साहब और गुजरात के वज़ीरे आला नरेन्द्र मोदी दोनों के वीज़े कैन्सिल करने में फ़र्क़ करना चाहिए। मोदी एक सियासत दान है जबकि मौलाना कल्बे सादिक़ साहब मौलाना और मज़हबी रहनुमा हैं लिहाज़ा अमरीका का यह क़दम शीओं की तौहीन की वजह है। उन्होंने कहा कि इस सिलसिले में मौलाना कल्बे सादिक़ साहब जब लखनऊ लौटेंगे तब हिक्मते अमली तैयार की जायेगी। उन्होंने कहा कि फ़िरक़ा वाराना इख़्तेलाफ पैदा करने के नाम पर कुछ मोलवी एक पार्टी से उसकी क़ीमत वसूल कर रहे हैं इन सब बातों के सामने आने पर क़ौम के लोगों को उन से दूर रह कर इसका फैसला करना चाहिए।

मौलाना कल्बे जवाद साहब ने कहा कि वक़्फ सलतनत बेगम की ज़मीन पर तामीराती कामों के सिलसिले में शीआ वक़्फ़ बोर्ड के चेयरमैन जनाब मुख़्तार अनीस ने उनसे मुलाक़ात की और उन्हें यक़ीन दिलाया कि तीन दिन के अन्दर ग़ैर क़ानूनी तामीराती कामों को रोक दिया जायेगा। मौलाना ने कहा कि अगर तीन दिन में यह न रोका गया तो आईन्दा जुमा को इसके ख़िलाफ मुज़ाहेरा किया जायेगा। मौलाना ने आज अपनी जान के ख़तरे का भी अन्देशा ज़ाहिर किया उन्होंने कहा कि ज़िला इन्तिज़ामिया के इशारे पर काम न करने की वजह से जहाँ ज़िला इन्तिज़ामिया उनकी जान की दुश्मन है वहीं वक़्फ इमलाक को बर्बाद होने से बचाने की मुहिम चलाने पर औक़ाफ पर क़ब्ज़ा करने वाले उनकी जान के दुश्मन हो गये हैं। इसके अलावा वह लोग भी जो भड़काउ तक़रीरें करते हैं क्योंकि मैं बराबर ही उनके ख़िलाफ रहता हूँ। उन्होंने ने कहा कि अगर क़ौम के लोग मुझे मना कर दें कि मैं क़ौम के मामले में न आउँ तो मैं उनके कहने पर अमल नहीं करूँगा।